स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Vol. 10, ISSUE-1 **(JULY-SEPTEMBER 2019)** **ISSN : 2395-7115**

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :
डॉ. रामफल दलाल

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सह आचार्य एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी

सह सम्पादक :
समुद्र सिंह

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ.	7–7
2.	ग्रामीण जीवन : प्रेमचंद युगीन हिन्दी उपन्यासों में	डॉ0 तजिन्दर कौर	8–10
3.	Participation of Women in the Politics of MCD : Challenges and its Significance	Ranjani Bahadur Singh	11–16
4.	भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान एंव महत्त्व	डॉ. आशा देवी	17–23
5.	जशपुर के पुरातात्विक धरोहर	रामसेवक राम भगत डॉ. मंजुलता कश्यप	24–27
6.	हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव (अज्ञेय एवं मोहन राकेश के संदर्भ में)	अनमोल कुमार	28–30
7.	महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में चिकित्सा शास्त्रीय विवेचन	डॉ० विवेक शर्मा	31–35
8.	मध्यकालीन भाषानाटक की सांगीतिक पद्धति (अंकिया–नाट के विशेष सन्दर्भ में)	Nitpriya Pralay	36–40
9.	आदिवासी प्रतिरोध की चिंगारी : 'अंगोर'	आशा पी.	41–43
10.	महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी के असंतुलित जीवन का चित्रण (श्रृंखला की कड़ियाँ)	डॉ. आशा देवी	44–51
11.	हनुमानगढ़ शहर का नगरीय स्तरीकरण और पर्यावरण का बदलता स्वरूप	कल्पना डॉ0 सुनील कुमार	52–55
12.	स्त्रीपक्ष उपन्यास : नारी विमर्श	डॉ. देव्यानी महिड़ा	56–59
13.	राजस्थान राज्य के शहर हनुमानगढ़ का नगरीय स्तरीयकरण और पर्यावरण विमर्श	कल्पना डॉ0 सुनील कुमार	60–62
14.	हिंदी संत काव्य और मानवतावादी कविता	डॉ. अनिल प्रभाकर कांबले	63–65
15.	सामाजिक संरचना–वाल्मीकि रामायण के सन्दर्भ में	डॉ. आरती रानी	66–68
16.	गांधी चिन्तन : तात्त्विक आधार	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	69–73
17.	तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी–कबीर	डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा	74–78
18.	समकालीन हिंदी कहानियों में आदिवासी अस्मिता : संघर्ष एवं प्रतिरोध	डॉ. विजी. वी	79–82
19.	विजयदान देथा की कहानी ''दुविधा'' व उसके फिल्मी रूपान्तरण में लोक संस्कृति की झलक	पीताम्बरी	83–84

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.478

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July-September 2019 Page No. : 69-73

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

गांधी चिन्तन : तात्त्विक आधार

गांधी ने अपने सम्पूर्ण नैतिक दर्शन का निर्माण अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य के आधार पर किया है जिन्हें जैन आचार्यों ने 'पंच महाव्रत'की संज्ञा दी है। इन पंच महाव्रतों के अतिरिक्त सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी, शारीरिक श्रम, अभय, अस्वाद तथा अस्पृश्यता निवारण का प्रतिपादन उन्होंने तत्कालीन भारतीय राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकरही किया था। एकादश व्रतों को गांधीजी के नैतिक दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त माना जा सकता है।

इस शताब्दी में विज्ञान और तकनीक के अंधाधुंध प्रयोग से लोगों के दुःख, कष्ट और गरीबी में बढ़ोतरी हुई है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के शोषण को बढ़ावा मिला है। इस प्रकार शोषण न केवल गरिमाहीन, अमानवीय है बल्कि अनैतिक भी है। इसलिए ऐसी कोई भी व्यवस्था, जो अन्य लोगों के कल्याण के लिए व्यक्ति को साधन के रूप में प्रयोग करे, वह मूल रूप से अनैतिक है और स्थायी रूप से उसका त्याग करना ही श्रेयस्कर है।

गांधी के अनुसार हमारा आदर्श कभी भी नैतिक नियम से पृथक नहीं होना चाहिए। गांधी एक शोषण विहीन व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे। इसके लिए गांधी उन प्राचीन भारतीय परम्पराओं में गए जिसमें नैतिकता व मानवीय मूल्यों परबल दिया गया है। गांधी ने न केवल व्यक्ति को बल्कि समाज को भी नैतिक बनाने का प्रयास किया और वे अहिंसा आधारित सभ्यता का निर्माण करना चाहते थे। गांधी के सारे सिद्धान्तों में सत्य व अहिंसा का समावेश है। सत्य व अहिंसा उनके सब सिद्धान्तों के इर्द–गिर्द घूमते हैं।

a). सत्य–गांधी के विचार में सत्य की अवधारणा मौलिक है। गांधी सत्य की अवधारणा तक किसी दार्शनिक तर्क या आध्यात्मिक अनुमान द्वारा नहीं पहुंचते हैं। जीवन के जिस रूप में सत्य का प्रयोग किया जाता है उसी ढंग से गांधी को इस सत्य का अर्थ दृष्टिगोचर हुआ है। गांधी के लिए सत्य के अतिरिक्त किसी का भी अस्तित्व नहीं है। सत्य के नियमों में न केवल सत्य बोलना ही शामिल है, बल्कि इसका व्यापक अर्थ है। यह जीवन के सब रूपों, राजनीति सहित की ओर इशारा करता है। सत्य की खोज सबकी सेवा के द्वारा ही संभव है।

गांधी सत्य के उपासक हैं। सत्य ही ईश्वर है। सत्य एक विवरण के रूप में या ईश्वर की एक विशेषता की अपेक्षा ईश्वर सत्य के लिए मात्र एक उपाधि है। सत्य एक सर्वव्यापक सिद्धान्त है। यह एक परम वास्तविकता है ओर व्यक्ति उसे अलग–अलग ढंग से पुकारते हैं और अलग अलग रूपों में इसकी पूजा करते हैं। गांधी के अनुसार ''राम सर्वशक्तिमान तत्त्व है जिसका नाम हृदय में धारण करने सेसभी मानसिक, नैतिक और भौतिक व्याधियां दूर हो जाती है।''[1]

''सत्य एक मूलभूत नैतिक सद्गुण है, यह साध्य है, यह सर्वोच्च और पूर्णहै।''[2] यह एक ऐसा सिद्धान्त है जिसका प्रत्येक व्यक्ति में वास है। यह एकता पैदा करने वाली शक्ति है। सत्य के दर्शन का अर्थ है एकता का दर्शन। सत्य की कार्यात्मक अभिव्यक्ति प्रेम है। प्रेम सब अंत र्विरोधों का मेल कराता है और सब वैर भावों को हल करता है। यह न केवल धर्म की एकता और सब विश्वासों के लिए आदर को बढ़ावा देता है बल्कि जाति, रंग, विश्वास व लिंग के संदर्भ में सब भेदभावों की कृत्रिमता को दिखाता है।

सत्य व अहिंसा–सत्य का व्यावहारिक प्रयोग ही अहिंसा है। गांधी कहते हैं, ''वह बुनियादी सिद्धान्त जिस पर अहिंसा का यहज व्यवहार टिका है कि जोव्यक्ति के स्वयं के लिए अच्छा है वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए भी समान रूप सेअच्छा है।''[3] गांधी के लिए अहिंसा साधन है और सत्य साध्य है। वे सत्य के खातिर अहिंसा छोड़ने को तैयार थे। ''सत्य की खोज और उसके विचार के दौरान अहिंसाके रत्न की खोज हुई है।''[4] गांधी के अनुसार सत्य से पृथक अहिंसा नैतिक पतन की ओर ले जाएगी। इस प्रकार से गांधी इस तथ्य से परिचित है कि सत्य और अहिंसा आपस में जुड़े हुए हैं और